1 कुरिन्थियों अध्याय 8 और 9

रविवार, 13 अक्टूबर 2019

अध्याय आठ

प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया में एक और प्रश्न और समस्या की ओर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, जो मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन से संबंधित थी। उनके पृष्ठभूमि, संस्कृति और स्थान को देखते हुए, यह एक ऐसा विषय था जिसका सामना उन्हें नियमित रूप से करना पड़ता था।

ज्ञान को प्रेम में धारण किया जाना चाहिए (8:1-3)

1 अब मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में–हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है। ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है।
2 यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता।
3 परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो परमेश्वर उसे पहिचानता है।

कुरिन्थियों के लोग गहरे रूप से मूर्तिपूजक पृष्ठभूमि से आए थे। वे मूर्तिपूजा में इतने डूबे हुए थे कि पौलुस अध्याय 12 में यह उल्लेख करते हैं: *"तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजातीय थे, तो गूंगी मूर्तियों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे।"* (1 कुरिन्थियों 12:2)

पार्श्व टिप्पणी:

कृपया यह ध्यान में रखें कि बाइबल में दो प्रकार की मूर्तियाँ होती हैं:
मूर्तियाँ जो वस्तुएँ होती हैं–ये वे भौतिक वस्तुएँ हैं जिन्हें परमेश्वर के रूप में या परमेश्वर के स्थान पर पूजा जाता है।
हृदय की मूर्तियाँ–ये वे बातें हैं जिन्हें हम अपने हृदय में रखते हैं और जो परमेश्वर के स्थान को ले लेती हैं, और इस प्रकार वे वह ध्यान और आदर प्राप्त करती हैं जो केवल परमेश्वर को ही मिलना चाहिए।

इस अध्याय में, स्पष्ट रूप से पौलुस उन मूर्तियों के विषय में बात कर रहे हैं जो वस्तुएँ हैं।

"मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुएँ" के लिए यूनानी शब्द *'eidōlothuton'-'ऐडोलोथोटून'* का अर्थ है वे सभी वस्तुएँ जो मूर्तियों को बलिदान के रूप में चढ़ाई जाती थीं, और विशेष रूप से उस मांस को जो बलिदान के बाद बच जाता था और या तो भोज में खाया जाता था या (गरीबों और कंजूसों के द्वारा) बाज़ार में बेचा जाता था। तो स्थिति यह थी कि जिस बाज़ार में मांस बेचा जाता था, वहाँ ऐसा मांस भी मिलता था जो पहले मूर्तियों को बलिदान के रूप में चढ़ाया गया था। यह मांस अक्सर (हालाँकि हमेशा नहीं) इस रूप में चिह्नित होता था, संभवतः किसी विशेष चिन्ह के द्वारा, जिससे यह पता चलता था कि यह पहले किसी मूर्ति को चढ़ाया गया था। जो लोग मूर्तियों की पूजा करते थे, उनके

लिए यह "विशेष" मांस था। प्रश्न यह था कि क्या कोई विश्वासी जो बाज़ार जाता है, उसे ऐसा मांस खरीदना और खाना चाहिए जो किसी मूर्ति को बलिदान के रूप में चढ़ाया गया हो?

पौलुस इस विषय को, अर्थात् मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुओं को खाने के प्रश्न को, यहाँ अध्याय 8 में संबोधित करते हैं, और बाद में अध्याय 10 में एक बार फिर इस पर लौटते हैं।

- **वचन 1:**

ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम उन्नति करता है।

लोगों के पास ज्ञान था क्योंकि उन्हें अब मूर्तियों के विषय में सत्य सिखाया गया था, परन्तु वे सत्य को जानने के कारण घमण्डी हो गए, बजाय इसके कि वे प्रेम में चलते।

सत्य का ज्ञान प्रेम के साथ जुड़ा होना चाहिए। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम उन लोगों की निन्दा करते हुए इधर-उधर नहीं चलते जो मूर्तियों की पूजा करते हैं, क्योंकि अक्सर वे मूर्तियों के विषय में सत्य को नहीं जानते। हमें प्रेम में चलना चाहिए।

- **वचन 2:**

यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता।

भले ही हम सत्य को जानते हों, फिर भी हमें यह समझना चाहिए कि हम सब कुछ नहीं जानते। यदि ज्ञान हमें घमण्डी बना देता है, तो यह हमारी अज्ञानता का संकेत है। हम वैसा नहीं जानते जैसा हमें जानना चाहिए।

- **वचन 3:**

परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो परमेश्वर उसे पहिचानता है।

परमेश्वर से प्रेम करना और लोगों से प्रेम करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हमें जानते हैं। यह कितनी महान बात है—कि हम ऐसे व्यक्ति हों जिन्हें परमेश्वर जानते हों।

कोई और परमेश्वर नहीं है (8:4-6)

4 अत: मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में–हम जानते हैं कि मूर्ति जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं।
5 यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं–जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं
6 तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है : अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएँ हैं, और हम उसी के लिये

हैं। और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएँ हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं।

मूर्ति कुछ भी नहीं है। मूर्ति एक निर्जीव भौतिक वस्तु है, जिसमें स्वयं की कोई शक्ति नहीं होती। "तथाकथित देवता" कहलाने वाली बहुत सी बातें हो सकती हैं, और स्वर्ग और पृथ्वी की बहुत सी वस्तुएँ हो सकती हैं जिनका प्रतिनिधित्व किया जाता है और जिनकी पूजा की जाती है। परन्तु एक ही सच्चा परमेश्वर है—पिता—और एक ही प्रभु यीशु मसीह हैं, जिनके द्वारा और जिनके लिये सब वस्तुएँ अस्तित्व में हैं। यह वह सत्य है जिसे हम जानते हैं।

इसलिये हम किसी मूर्ति से या मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुओं से भयभीत नहीं होते।

पौलुस अध्याय 10 में आगे चलकर इस विषय को संबोधित करेंगे कि मूर्तियों के पीछे दुष्टात्माएँ होती हैं, जो वास्तव में उस उपासना को ग्रहण करती हैं जो मूर्ति को चढ़ाई जाती है।

सब लोग सत्य को नहीं जानते (8:7,8)

[7] पर सब को यह ज्ञान नहीं, परन्तु कुछ तो अब तक मूर्ति को कुछ समझने के कारण मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तु को कुछ समझकर खाते हैं, और उनका विवेक निर्बल होने के कारण अशुद्ध हो जाता है।
[8] भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचाता। यदि हम न खाएँ तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएँ तो कुछ लाभ नहीं।

कुछ लोग उस सत्य को नहीं जानते जिसे हम जानते हैं। उनके लिये मूर्ति ही उनका 'देवता' है और वही उनकी उपासना का विषय है। इसलिये वे मूर्ति को चढ़ाई गई वस्तुओं को "मूर्ति की धारणा के साथ" खाते हैं—अर्थात् यह उनका उस मूर्ति के प्रति उपासना का कार्य होता है।

परन्तु हम जानते हैं कि मूर्ति को चढ़ाई गई वस्तु को खाना या न खाना, हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं डालता और न ही परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को बदलता है। पौलुस इस विषय को अध्याय 10 में और विस्तार से समझाते हैं। 1 तीमुथियुस 4:3-5 में लिखा है, कि जब हम खाने से पहले प्रार्थना करते हैं, तो वह भोजन परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा पवित्र ठहराया जाता है।

हमारा ज्ञान और स्वतंत्रता किसी और के लिये ठोकर का कारण न बने (8:9-13)

[9] परन्तु सावधान! ऐसा न हो कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए।
[10] क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तु खाने का साहस न हो जाएगा।
[11] इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिसके लिये मसीह मरा, नष्ट हो जाएगा।
[12] इस प्रकार भाइयों के विरुद्ध अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक को चोट पहुँचाने से, तुम मसीह के विरुद्ध अपराध करते हो।
[13] इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊँगा, न हो कि मैं

अपने भाई के लिये ठोकर का कारण बनूँ।

महत्वपूर्ण बात यह है कि सत्य को जानने के कारण जो स्वतंत्रता हमारे पास है, वह किसी दूसरे व्यक्ति को गलत काम करने के लिये प्रेरित न करे। पौलुस समझाते हैं कि यदि कोई दूसरा व्यक्ति हो, विशेषकर एक "निर्बल भाई" (अर्थात् ऐसा विश्वासी जो विश्वास में नया है, जवान है, और जिसे मूर्तियों तथा मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुओं के विषय में वह सत्य नहीं पता जो आपको पता है), और यदि उसके मन में अब भी मूर्ति और मूर्ति को चढ़ाई गई वस्तुओं के प्रति भय और आदर की भावना है—तो यदि वह आपको मूर्ति को चढ़ाई गई वस्तु खाते हुए देखे, तो वह गलती से यह समझ सकता है कि आप भी मूर्ति का आदर कर रहे हैं और उसकी उपासना कर रहे हैं। वास्तव में आप ऐसा नहीं कर रहे होते। परन्तु उनकी अज्ञानता के कारण, और आपके कार्य को देखकर, वे गलत काम करने के लिये प्रोत्साहित हो जाते हैं—अर्थात् मूर्ति को चढ़ाई गई वस्तु को उपासना के रूप में खाना। ऐसी स्थिति में मेरा कार्य वास्तव में निर्बल भाई को पाप करने के लिये प्रेरित करता है, और इस प्रकार मैं मसीह के विरुद्ध पाप करता हूँ। इसलिये ऐसी स्थिति में, मूर्ति को चढ़ाया गया मांस न खाना ही सर्वोत्तम है।

हम इस विषय को अध्याय 10 में और अधिक विस्तार से फिर से देखेंगे, और पौलुस की पत्रियों से संबंधित अन्य शास्त्र-वचनों पर भी विचार करेंगे।

अध्याय नौ

कुरिन्थियों की कलीसिया में एक और बड़ी समस्या यह थी कि कुछ लोग पौलुस के प्रेरित होने के दावे पर विवाद करते थे। हम देखते हैं कि पौलुस कुरिन्थियों के नाम अपनी दोनों पत्रियों में इस विषय को संबोधित करते हैं। 1 कुरिन्थियों में, यहाँ अध्याय 9 में, पौलुस पहली बार स्पष्ट कारण प्रस्तुत करते हैं कि वह प्रभु यीशु मसीह के सच्चे प्रेरित क्यों हैं।

प्रेरित का अर्थ है "भेजा हुआ व्यक्ति।" ऐसा व्यक्ति जिसे भेजने वाले की ओर से पूर्ण अधिकार दिया गया हो कि वह उसका प्रतिनिधित्व करे और उस कार्य को पूरा करे (अर्थात उद्देश्य) जिसके लिये उसे भेजा गया है। विश्वासियों के रूप में हम सब भी भेजे हुए लोग हैं। यीशु ने कहा, "जाओ," और यह हम सब के लिये था। यीशु ने कहा, "जैसे मेरे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ," और यह भी हम सब के लिये था। जब हम पौलुस द्वारा अपने प्रेरित होने की रक्षा को पढ़ते हैं, तो हमें यह सीखने को मिलता है कि वास्तव में प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने का क्या अर्थ है। ये वे सत्य हैं जिन्हें हम सब अपने जीवन और सेवकाई में लागू कर सकते हैं।

पौलुस प्रेरितत्व की रक्षा करता है और उसका स्पष्टीकरण देता है (9:1-15)

[1] क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैं ने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे

बनाए हुए नहीं?
[2] यदि मैं दूसरों के लिये प्रेरित नहीं, तौभी तुम्हारे लिये तो हूँ; क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो।
[3] जो मुझे जाँचते हैं, उनके लिये यही मेरा उत्तर है।
[4] क्या हमें खाने–पीने का अधिकार नहीं?
[5] क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन के साथ विवाह करके उसे लिये फिरें, जैसा अन्य प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफा करते हैं?
[6] या केवल मुझे और बरनबास को ही अधिकार नहीं कि कमाई करना छोड़ें।
[7] कौन कभी अपनी गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है? कौन दाख की बारी लगाकर उसका फल नहीं खाता? कौन भेड़ों की रखवाली करके उनका दूध नहीं पीता?
[8] क्या मैं ये बातें मनुष्य ही की रीति पर बोलता हूँ?
[9] क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, "दाँवते समय चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना।" क्या परमेश्वर बैलों ही की चिन्ता करता है?
[10] या विशेष करके हमारे लिये कहता है। हाँ, हमारे लिये ही लिखा गया, क्योंकि उचित है कि जोतनेवाला आशा से जोते और दाँवनेवाला भागी होने की आशा से दाँवनी करे।
[11] अत: जब कि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएँ बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें।
[12] जब दूसरों का तुम पर यह अधिकार है, तो क्या हमारा इससे अधिक न होगा?
परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार में कुछ रुकावट न हो।
[13] क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं, वे वेदी के साथ भागी होते हैं?
[14] इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो।
[15] परन्तु मैं इनमें से कोई भी बात काम में न लाया, और मैं ने ये बातें इसलिये नहीं लिखीं कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि इससे तो मेरा मरना ही भला है कि कोई मेरे घमण्ड को व्यर्थ ठहराए।

यह वे बातें हैं जिनकी ओर पौलुस अपने प्रेरित होने की रक्षा करते समय संकेत करते हैं:

1) तुम ही मेरा काम हो और मेरे प्रेरित होने की मुहर हो
2) मैंने किसी भी प्रकार से अपने अधिकार का दुरुपयोग नहीं किया—वास्तव में मैंने एक प्रेरित होने के अपने "अधिकारों" का उपयोग तक नहीं किया:
    a) विश्वासी पत्नी नहीं रखने का चुनाव किया
    b) काम करना बंद न करने का चुनाव किया—प्रेरित के रूप में सेवा करते हुए भी काम करता रहा
    c) सेवा करते समय भौतिक सहायता की माँग न करने का चुनाव किया

परमेश्वर की सेवा करना लोगों के बारे में है। पौलुस ने कुरिन्थियों की ओर संकेत किया—उनके जीवनों की ओर जो परिवर्तित हुए थे—इन्हें फल और प्रमाण के रूप में कि वह परमेश्वर द्वारा भेजे गए थे। हमें फल ("परिणाम") को इस दृष्टि से देखना सीखना चाहिए कि लोगों के जीवन कैसे बदले हैं, न कि अन्य बातों के आधार पर। उदाहरण के लिये—प्रतिष्ठा, लोकप्रियता, आदि।

परमेश्वर की सेवा में बलिदान की आवश्यकता होती है। पौलुस ने स्वेच्छा से बलिदान करने का चुनाव किया। उन्होंने उन बातों को छोड़ने का निर्णय लिया जिनका वह वैध रूप से आनंद ले सकते थे, ताकि वह परमेश्वर की सेवा कर सकें। क्या हम ऐसा करने के लिये तैयार हैं?

पौलुस—प्रेरितत्व एक भण्डारपन है (9:16-18)

16 यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है। यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!
17 क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।
18 तो मेरी कौन सी मजदूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत मेंत कर दूँ, यहाँ तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है उसको भी मैं पूरी रीति से काम में न लाऊँ।

परमेश्वर की सेवा में एक "आवश्यकता" और एक "भण्डारपन" होता है। परमेश्वर की बुलाहट में परमेश्वर और उसके लोगों के प्रति एक गहरी **जिम्मेदारी** का बोध होता है। साथ ही परमेश्वर और उसके लोगों के प्रति **उत्तरदायित्व** की भी एक गहरी भावना होती है।

परमेश्वर की सेवा भण्डारपन है—इसमें जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व दोनों शामिल हैं। क्या हम उन बातों के अच्छे भण्डारी बनने के लिये तैयार हैं जो परमेश्वर ने हमें दी हैं—संसाधन, वरदान, अनुग्रह?

पौलुस—प्रेरितत्व सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बन जाना है (9:19-23)

19 क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ।
20 मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ।
21 व्यवस्थाहीनों के लिये मैं – जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ – व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ।
22 मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊँ। मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।
23 मैं यह सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ।

परमेश्वर की सेवा लोगों की सेवा है—स्वेच्छा से उनके संसार में प्रवेश करना, उनके समान बनना, ताकि उन्हें पहुँचा जा सके। क्या हम ऐसा करने के लिये तैयार हैं?

जब हम अपने नगर की ओर देखते हैं, तो जनसांख्यिकी बहुत जटिल है। हर प्रकार के लोग हैं,

हर प्रकार की परिस्थितियों और चुनौतियों में। यद्यपि हम हर प्रकार के लोगों तक नहीं पहुँच सकते—फिर भी क्या हम कुछ लोगों के संसार में कदम रखने के लिये तैयार हैं, जिनके पास परमेश्वर हमें भेजते हैं? लोगों के संसार में प्रवेश करना आसान या सुविधाजनक नहीं होगा। इसमें जोखिम हो सकते हैं। इसमें सांस्कृतिक बदलाव शामिल हो सकते हैं। इसमें सामाजिक वर्जनाओं को पार करना पड़ सकता है। इसके लिये हमें अपने प्रयासों, समय, संसाधनों, आदि के संदर्भ में स्वयं को फैलाना पड़ सकता है। फिर भी—क्या हम सुसमाचार के लिये ऐसा करने को तैयार हैं?

पौलुस—प्रेरितत्व आत्म-संयम और आत्म-अनुशासन की क्षमता है (9:24-27)

24 क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो।
25 हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है; वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं।
26 इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।
27 परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।

परमेश्वर की सेवा के लिये आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता होती है। जब हम प्रभु की सेवा करते हैं, तो हमें अपने ही जीवन पर चौकसी रखनी चाहिए।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 13 अक्टूबर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 8 और 9

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 8 और 9*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1) *मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुओं के विषय पर चर्चा करें—ऐसी व्यावहारिक परिस्थितियाँ जिनका आपने सामना किया हो। आपने कैसे प्रतिक्रिया दी? अध्याय 8 से आप क्या नई सीख ले सकते हैं? (याद रखें, इस विषय पर अध्याय 10 में और भी बताया गया है।)*

2) *आज के समय में हमारी परमेश्वर की सेवा के संदर्भ में निम्नलिखित प्रत्येक बात पर चर्चा करें:*
   (A) परमेश्वर की सेवा लोगों के बारे में है।

(B) परमेश्वर की सेवा में बलिदान की आवश्यकता होती है।

(C) परमेश्वर की सेवा भण्डारपन है—इसमें जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व है।

(D) परमेश्वर की सेवा लोगों की सेवा है—स्वेच्छा से उनके संसार में प्रवेश करना।

(E) परमेश्वर की सेवा के लिये आत्म-संयम की आवश्यकता होती है।

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org